प्रकृति से छेड़छाड़ . . .

अक्सर शेर शावक की माँ शेरनी और पिता शेर ही होते हैं और बछड़े की माँ गाय और पिता साँड होते हैं। ऐसा ही अन्य जानवरों, कीड़े-मकौड़ों, मछलियों... के साथ भी होता है। इतना ही नहीं पौधों में भी जैसा बीज होगा वैसी ही फसल होगी। कलमी आम के पेड़ पर कलमी आम ही लगेंगे और शरबती गेहूँ बोने पर शरबती फसल ही होगी। यह प्रकृति का नियम है।

लेकिन मान लो कि माँग ऐसी गाय की हो जो दूध खूब देती हो, या ऐसे गेहूँ, चावल की जिनकी पैदावार खूब हो तो? प्रकृति के कामकाज में थोड़ा फेरबदल कर वैज्ञानिकों ने नई किस्में तैयार की हैं। इसमें फसलों/पशुओं के मनचाहे गुणों वाली किस्में चुनकर उनके नर-मादा के मेल से उन्नत नस्लें तैयार की जाती हैं। इन्हें संकर किस्म या नस्ल के चावल, गेहूँ, गाय, भैंस कहते हैं। अब पौधों और पशुओं की संकर नस्लें तैयार करना आम बात है।

संकरण एक ही प्रजाति तक सीमित नहीं है। वैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रजातियों के मेल से नई प्रजातियाँ विकसित की हैं। कुछ उदाहरण यहाँ दिए गए हैं।

इन उदाहरणों में कुछ बातें ध्यान देने वाली हैं। संकरण का प्रयोग अक्सर सम्बन्धित प्रजाति में ही किया जाता है। जैसे शेर और बाघ। या घोड़ा और गधा।

ऐसे संकर बच्चों में कुछ तो चाहे हुए गुण होते हैं लेकिन कुछ अनचाहे गुण भी आ जाते हैं। इनपर किसी का बस नहीं चलता। जैसे बौनापन, बच्चे पैदा न कर पाना (खास तौर पर नर बच्चों में) आदि। क्या तुम्हें प्रकृति के साथ यह छेड़छाड़ ठीक लगती है?

टायगॉन
पिताः टाइगर (बाघ)
माँः लायन (सिंह)

लाइगर
पिताः लायन (सिंह)
माँः टाइगर (बाघ)

लेपॉन
पिताः लेपर्ड (तेन्दुआ)
माँः लायन (सिंह)

ज़ॉर्स
पिताः ज़ेबरा
माँः हॉर्स (घोड़ा)

वुल्फिन
पिताः व्हेल मछली
माँः डॉल्फिन

एक वुल्फिन, एक डॉल्फिन

शोट
पिताः शीप (भेड़)
माँः गोट (बकरी)

कामा
पिताः कैमल (ऊँट)
माँः लामा

ज़ॉन्की
पिताः ज़ेबरा
माँः डॉकी (गधा)